U.BOOK P.F.R

Truth of Buddhism

A BOOK BY……………………………………………………………………………………………………..

WRITER- RAJESH KUSHWAHA

E BOOK BY –RAKESH K. MAURYA

CONTACT US:-

9695730152-8178951365

विषय - सूची

बुद्ध आर्य थे या अनार्य जानिये”

प्राचीन भारत में कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था थी जिसका वर्तमान जन्म आधारित जाति व्यवस्था से कोई सम्बन्ध नहीं और भगवान बुद्ध ने अपने व्यवहारिक जीवन में वैदिक वर्ण व्यवस्था का ही पालन किया किसी अन्य व्यवस्था का नहीं |*

बुद्ध का जन्म ईसा से ५६३ वर्ष पूर्व लुम्बिनी (वर्तमान नेपाल) के शाक्य क्षत्रिय राजपरिवार में हुआ | उनके पिता का नाम राजा शुद्धोधन और माता का नाम महामाया था | इनके बचपन का नाम सिद्धार्थ था और सोलह वर्ष की अवस्था में इनका विवाह क्षत्रिय राजपरिवार की राजकुमारी यशोधरा से हुआ था .... (सम्पूर्ण जीवनी के लिए भगवान बुद्ध का जीवन चरित्र पढ़ें)

बुद्ध के नाम से दुकान चलाने वाले छद्म बौद्ध स्वयं को मूल निवासी बताते हैं और आर्यों को विदेशी | ये बुद्धिहिन् आर्यों को विदेशी बताने से पहले ये भूल जाते हैं कि भगवान बुद्ध भी एक आर्य थे दलित नहीं |

भगवान बुद्ध स्वयं को आर्य कहते थे दलित नहीं भगवान बुद्ध को आर्य शब्द से अत्यधिक प्रेम था उनके चार आर्य सत्य, आर्य अष्टांगिक मार्ग और आर्य श्रावक तो बहुत ही प्रसिद्ध हैं |

आर्यों की व्याख्या करते हुए भगवान बुद्ध कहते हैं कि –
न तेन अरियो होति येन पाणानि हिंसति |अहिंसा सब्ब पाणानि अरियोति पवुच्चति || (धम्मपद धम्मठवग्गो २७०:५)
अर्थात प्राणियों की हिंसा करने से कोई आर्य नहीं कहलाता, समस्त प्राणियों की

अहिंसा से ही मनुष्य आर्य कहलाता है |
भगवान बुद्ध ने सन्यास से पूर्व सदैव क्षात्र धर्म का पालन किया तथा सन्यास लेने के पश्चात् अपने कर्म एवं योग्यतानुसार ब्राह्मण वर्ण को धारण किया | भगवान बुद्ध के सम्पूर्ण जीवन में ऐसा कोई प्रसंग नहीं मिलता जिससे यह सिद्ध हो कि उन्होंने दलितवाद को धारण किया और ब्राह्मणवाद को गालियाँ दीं जबकि इसके विपरीत ऐसे कई प्रमाण हैं जिससे यह सिद्ध होता है कि वह सन्यास के बाद स्वयं को ब्राह्मण कहते थे जिसमें से एक प्रसंग मैं नीचे प्रस्तुत कर रहा हूँ -
सुंदरिक भारद्वाज सुत्त में कथा है कि सुंदरिक भारद्वाज जब यज्ञ समाप्त कर चुका तो वह किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण को यज्ञ शेष देना चाहता था | उसने सन्यासी गौतम बुद्ध को देखा और जब उसने उनकी जाति पूछी तो बुद्ध ने कहा जाति मत पूछ मैं ब्राह्मण हूँ और वे उपदेश करते हुए बोले – *"यदंतगु वेदगु यन्न काले, यस्साहुतिल ले तस्स इज्झेति ब्रूमि |" (सुत्तनिपात ४५८)*

अर्थात वेद को जानने वाला जिसकी आहुति को प्राप्त करे उसका यज्ञ सफल होता है ऐसा मैं कहता हूँ | तब सुंदरिक भारद्वाज ने कहा - "अद्धा हि तस्स हुतं इज्झे यं तादिसं वेद्गुम अद्द्साम |" (सुत्तनिपात ४५९) अर्थात सचमुच मेरा यज्ञ सफल हो गया जिसे आप जैसे वेदज्ञ ब्राह्मण के दर्शन हो गये |

भगवान बुद्ध जन्म आधारित जाति व्यवस्था के विरुद्ध थे वे कर्म आधारित वैदिक वर्ण व्यवस्था को मानते थे इस सम्बन्ध में उन्होंने वसल सुत्त (वृषल सूत्र) में कहा है –
न जच्चा वसलो होति न जच्चा होति ब्राह्मणो | कम्मना वसलो होति कम्मना होति ब्राह्मणो ||
अर्थात जन्म से कोई चाण्डाल (शूद्र) नहीं होता और जन्म से कोई ब्राह्मण भी नहीं होता | कर्म से ही चाण्डाल और कर्म से ही ब्राह्मण होता है।भगवान

बुद्ध ने ब्राह्मण के सन्दर्भ में जो व्याख्या की है वह वैदिक शास्त्रों के अनुसार ही की है उससे भिन्न नहीं | भगवान बुद्ध ब्राह्मण किसे मानते थे इसका वर्णन धम्मपद के ब्राह्मण वग्ग में इस प्रकार है –
पाली भाषा में - न जटाहि न गोत्तेहि न जच्चा होति ब्राह्मणो | यम्ही सच्चं च धम्मो च सो सुची सो च ब्राह्मणो ||
(श्लोक – न जटाभिर्न गोत्रेर्न जात्या भवति ब्राह्मणः | यस्मिन सत्यं च धर्मश्च स शुचिः स च ब्राह्मणः ||)
अर्थ - न जटा से, न गोत्र से, न जन्म से ब्राह्मण होता है जिसमे सत्य और धर्म है वही पवित्र है और वही ब्राह्मण है |
पाली भाषा में – *अकक्कसं विन्जापनिम गिरं सच्चं उदीरये | काय नाभिसजे किंच तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ||*
(श्लोक – अकर्कषाम विज्ञापनी गिरं
अर्थ – जो इस प्रकार की अकर्कश, आदरयुक्त तथा सच्ची वाणी को बोले कि जिससे कुछ भी पीड़ा न हो उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ |

पाली भाषा में – यस्सालया न विज्जन्ति अन्नाय अकथकथी | अमतोगधं अनुप्पत्तं तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ||

अर्थ – जिसको आलस्य नहीं है, जो भली प्रकार जानकर अकथ पद का कहने वाला है, जिसने अमृत (परमेश्वर) को प्राप्त कर लिया है उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ | ....
*भगवान बुद्ध के उपदेशों का अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है कि उन्होंने अपने जीवन में कभी भी दलितपन को धारण नहीं किया और न ही किसी को दलित बनने के लिए प्रेरित किया | अतः यदि आप भगवान बुद्ध का अनुयायी बनना चाहते हैं तो आपको स्वार्थी राजनीतिज्ञों द्वारा फैलाये गये जातिवाद के जाल से निकलकर भगवान बुद्ध की तरह वैदिक वर्ण व्यवस्था को अपनाना

होगा । भगवान बुद्ध के उपदेश किसी जाति विशेष के लिए नहीं है बल्कि उनके उपदेश सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए हैं ।*

स्रोत --- बौद्ध ग्रन्थ तिपितक

||समाप्त||

२-

गौतम बुद्ध ,नही ब्राह्मण कृत है बौद्ध धर्म "

आप सब को यह पढ़ कर और सुन कर आश्चर्य हो सकता है , किन्तु जव बौद्ध दर्शन के विभिन्न आयामो पर अध्ययन करेगे और उसकी उतपत्ति तथा उसके विस्तार का अवलोकन करेगे तो आप भी इस बात से इंकार नही कर पायेंगे की जिस बौद्ध धर्म की बात हम करते है या सुनते है , उसके संस्थापक बुद्ध नही बल्कि उनके ब्राह्मण शिष्य है। भगवान बुद्ध ने कही यह जिक्र नही किया है कि मैं पूर्ववर्ती धर्म त्याग रहा हूं और नए धर्म का निर्माण कर रहा हूं , उन्होंने अपना धर्म स्पष्ट करते हुवे कई बार यह दर्शाया है कि मैं सनातन धर्म का हूं या मैं जिस धर्म की बात कर रहा हूं वह सनातन धर्म ही है।

"एसो धम्मो सनातनो"

"गौतम बुद्ध को बौद्ध धर्म का संस्थापक कहना और मानना उनके साथ अन्याय करने जैसा ही है । भगवान बुद्ध एक सुधारवादी दृष्टिकोण लेकर चले थे , उनका पूरा जीवन तत्कालिक सामाजिक विकृति के सुधर पर केंद्रित रहा ,न की किसी नये धर्म का निर्माण कर समाज को पृथक करने का था । बुद्ध जोड़ने आये थे फिर कोई अलग धर्म बना कर समाज को तोड़ने और कमजोर करने का कार्य बुद्ध कैसे कर सकते थे । "

फिर कैसे आया बौद्ध धर्म अस्तित्व में ??

यह आज के लिए शोध का विषय हो सकता है कि कैसे आया बौद्ध धर्म अस्तित्व में । वस्तुतः इस बात का कही प्रमाण नही मिलता जो यह साबित कर सके की बौद्ध नाम का कोई धर्म बुद्ध ने बनाया था । या इस बात का कही उल्लेख नही मिलता की बुद्ध ने अपना पुराना धर्म कब त्यागा, अतः यह मानना की बौद्ध धर्म के संस्थापक बुद्ध है यह जल्दीबाजी होगी।

वस्तुतः किसी भी पथ को धर्म कहने से पहले धर्म की अवधारणा पर विचार करना होगा, धर्म मानना न मानना यह हम पर आप पर निर्भर करता है ,किन्तु धर्म निर्माण मनुष्यो द्वारा हो यह कोरी गप्प्प है, धर्म का वास्तविक अर्थ जो धारण किया जायें या जो धारण करने योग्य वो वह धर्म है। फिर मनुष्य तो जन्म से ही धर्म को धारण किये हुवे है , एक मनुष्य के अंदर मनुष्योचित कर्म जन्म से ही उसकी धारणा में है, मनुष्य को मनुष्य होने के लिए मानवीय मूल्यों पर चलना होता है जो प्रकृति पद्दत है। प्रकृति हर प्रणी का धर्म स्वंय निर्धारित करती है मनुष्य के अंदर मानवीय गुण तो जानवरों के अंदर उनकी जाती के आधार पर उनसे संबंधित गुण, यह जीवन के साथ जो हमारे कर्म कार्यो से बाहय सस्कृति में अपनी विशेष क्षवी बनाते है यही तो धर्म है , यही तो हम प्रकृति के साथ धारण कर के आये है।

आप खुद सोचिये एक मनुष्य मनुष्यो के लिये पथ या मार्ग बना सकता है ,लेकिन धर्म नही , धर्म तो सास्वत है अनवरत है और एक रूप है , उसे स्वयं प्रकृति निर्धारित करती है , यही कारण है वह सनातन है सास्वत है सत्य है , यह गौतम बुद्ध भी जानते थे।

अत यह कहना की धर्म बुद्ध ने बनाया यह उनके प्रकृति प्रेमी और मानवीय मूल्यों के संदर्भ में उनके दिए संदेशों पर विवाद खड़ा कर सकता है।

तो अब बात करते है कि फिर बौद्ध धर्म कब अस्तित्व में आया ,

"भगवान बुद्ध के परिनिर्वाण के 150 वर्षों बाद उनके ब्राहमण अनुवाइयो ने बुद्ध के संदेशों को धर्म के रूप में परिभाषित कर एक अलग धर्म और व्यवस्था की नींव डालने का प्रयास किया "

आधुनिक बौद्ध धर्म असली ब्राह्मण धर्म इस लिए भी है , की इसमें सबसे अधिक किसी बात की चर्चा है तो , ब्राह्मण की ।

ब्राह्मण क्या ,और कैसे पर ही पूरा बौद्ध धर्म टिका है ? गंभीरता से अध्ययन करे तो ब्राह्मण ग्रथ है बौद्ध साहित्य ।

वर्तमान में नवबौद्ध जो बिना बूद्ध को जाने ही बुद्ध नाम का सर्टिफिकेट धारण किये है अगर इनकी दलील सुने तो बिलकुल अलग नजारा है। यह हर सभा मीटिंग में चीख चीख कर कहते है कि बौद्ध धर्म ब्राह्मण विरोधी धर्म है और ब्राह्मणों के खिलाफ बुद्ध ने बौद्ध धर्म बनाया था। यह बिलकुल ही बचकानी बात है जो वास्तविकता से मेल नही खाती क्यों की बौद्ध ग्रन्थो का अध्ययन करे तो ब्राह्मण क्या और कैसा हो यही सबसे प्रमुख विषय है उसका । और अगर मान लिया जाये की बुद्ध का धर्म ब्राह्मणों के खिलाफ था तो इस धर्म को हवा पानी किसने दिया , इस धर्म के बारे में हम आज जितना भी जान पा रहे है उस जानकारी का स्रोत किस्से प्राप्त हुवा। बौद्ध ग्रथों की रचना किसने की जिससे   हम बुद्ध को जान पाये और समझ पाये।

सवाल यह भी तो बनता है कि इस बौद्ध धर्म के संवर्धक कौन थे?

आप अध्ययन करे तो पायेंगे की गौतम बुद्ध के प्रथम 5 शिष्य में 4 ब्राह्मण , बुद्ध के प्रिय शिष्य अग्निहोत्र ब्राह्मण , प्रथम द्वितीय तृतीय बौद्ध संगतियों के आयोजक ब्राह्मण , बौद्ध विहारों के लिए सर्वाधिक भूमि दान करने वाले ब्राह्मण , बुद्ध से पूर्व 27 बौद्धों में 7 ब्राह्मण, सभी बौद्ध साहित्यों के रचनाकार ब्राह्मण , बौद्ध धम्म के सभी सम्प्रदायो यथा महायान हीनयान और बजरायन के सूत्रधार भी ब्राह्मण ,, तो क्या समझे आधुनिक बौद्ध धर्म की नींव ही टिकी है ब्राह्मण पर अगर इस धर्म से ब्राह्मणों के योगदान को निकाल कर

फेंक दे , बौद्ध धर्म में कुछ भी नही बचेगा क्यों की यह धर्म ही ब्राह्मणों का बनाया हुवा है।

यहा देखिये

Buddhists born to Brahmin families

There have been various notable Buddhists born to Brahmin families. Some like Sarisputra and Maudgalyayana were the Buddha's disciples, while some like Bodhidharma were missionaries spreading Buddhism beyond India. Others like Asvaghosa were poets; others like Chandragomin were grammarians. Both Sramanas and Brahmanas (whether Sramana or not) are important in terms of spirituality.

महायान(नार्गाजुन, अश्वघोष)

थेरबाड (बुद्धघोष)

वज्रयान(पद्मसंभव)

तिब्बत बौद्ध(पद्मसंभव)

चीना बौद्ध(कुमारजीव)

जेन बौद्ध(बुद्धिधर्मा)

कुंग फु(कुमारजीव)

वे ऑफ बुद्धिस्त्व(शांतिदेव)

बुद्धचरित (अश्वघोष Asvaghosa)

हरिता धम्मसुत्रा (हरित)

शून्यता अवधारणा (नार्गाजुन)

सेकँड बुद्धा (बसुबंधु)

यमनतका तंत्र (कनका)

वज्रयान-दवान्ताऊ-विकास्ना (ज्नानश्रीमित्रा)

यह सभी ब्राह्मण ही थे , और बौद्ध दर्शन के उत्थान में जितना इनका योगदान है उतना किसी का नही , अगर कहे की बौद्ध धर्म का कॉन्सेप्ट इनका ही था तो यह अतिश्योक्ति नही होगी । क्यों की अगर इन ब्राह्मणों और इनके योगदान को बौद्ध दर्शन से अलग करते है तो इस दर्शन में कुछ भी नही बचता क्यों की तब न बुद्ध समझ में आयेंगे न उनका दर्शन।

आज वर्तमान में तरह तरह के जीव बुद्ध के पीठ पीछे पैदा हो रहे है कोई मूलनिवासी है तो कोई नास्तिक कोई सामाजिक ठेकेदार तो कोई धर्मका ठेकेदार , और यह सब आपस में ही बुद्ध के पीठ पीछे एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप की राजनीती कर रहे है , जबकि बुद्ध तो आध्यात्म से निर्वाण का नाम है। बुद्ध ने राजनीती का त्याग कर दिया व्यक्तिगत सुखों का त्याग कर दिया । किन्तु विडम्बना देखिये उसी बुद्ध के नाम पर क्या क्या खेल खेला जा रहा है ,

आज के वर्तमान बौद्ध दर्शन में आप को बुद्ध कही नही दिखने वाले ,, आप को सिर्फ उल मूल फिजूल निवासी और इनके सड़ियल दकियानूसी थेथरोलॉजी के बड़े बड़े गप्प ही मिलेंगे , जो बुद्ध और उनके सिंद्धान्तो आदर्शों के बिलकुल विपरीत है । बुद्ध को जानना है समझाना है तो सनातन मंतव्य में ही समझा जा सकता है बुद्ध को उनके धर्म में जा कर समझिये क्यों की बुद्ध को ब्राह्मण कृत बौद्ध धर्म में ढूढेंगे तो ऐसी ही विकृति मिलेगी लेकिन बुद्ध नही मिलेंगे।

क्यों कि वर्तमान बौद्ध धर्म ही असल ब्राह्मणी धर्म है। , जिसके संस्थापक ब्राह्मण थे ,न की बुद्ध ,,क्यों की बुद्ध ने स्वयं को आर्य कहा है सनातनी कहा है।।

कही नही कहा की मैं कोई बौद्ध धर्म या नया धर्म बना रहा हूँ अतः जब स्वयं बुद्ध का धर्म सनातन है तो हमारा कोई अलग धर्म कैसे हो सकता है। यह 100% प्रमाणित तथ्य है की बौद्ध धर्म ही ब्राह्मणी धर्म है , जबकी सनातन धर्म में किसी वाद की परिकल्पना नही , सनातन धर्म वसुधैव कुटुम्बकम् की बात करता है। इस धर्म में सभी महापुरुषों को मानने और अनुशीलन करने की स्वतंत्रता है। यही सच्चा धर्म है। इसे अपनाना नही पड़ता , क्यों की हर एक मनुष्य सनातनी ही पैदा होता है।

बुद्ध भी सनातनी व्यवस्था में ही जन्मे थे ।

||समाप्त||

३-

कौन थे जातिवादी? श्री राम या गौतम बुद्ध?

बुद्ध कहते है :-

" .... बोधिसत्व हीनकुलो में ,चांडाल कुलो में ,रथकार कुलो में ,निषाद कुलो में उत्पन्न नही होते है ,किन्तु दो ही कुलो ब्राह्मण कुल और क्षत्रिय कुलो में ही होते है ,जब लोक में ब्राह्मण लोग बढ़े चढ़े है तब ब्राह्मण कुल में और जब क्षत्रिय लोग बढ़े चढ़े होते है तब क्षत्रियो कुल में उत्पन्न होते है | " – ललितविस्तार ३/२६ (पृष्ठ ६०-६१)

जब कि वही जब राम वनवास जाते है नदी पार करवाने के बाद जब राम जी केवट को पार कराई के नाम पर मुद्रिका देने का प्रयास करते है।तब केवट कहते है :- हे प्रभु हम दोनों एक ही जात के हैं , आप भी खेवन हार हो और मैं भी खेवनहार हूं , आप भव सागर के पार ले जाने वाले हो मैं नदी के पार ले जाने वाला हूं , हम दोनों की जाती और कर्म एक ही है, फिर एक केवट एक केवट के पारिश्रमिक कैसे ले सकता है ,, प्रभु जब हमारे समाज वाले यह जानेंगे तो मुझे समाज से वेदखल कर देंगे, कि एक खेवन हार ने एक खेवनहार से पारश्रमिक कैसे लिया ,, अतः हे श्री राम मैं आप से खेवनहारी नही लूंगा। अगर कुछ देना ही है तो जब मैं मोक्ष और मुक्ति के तट पर आऊंगा आप मुझे भी पर लगा देना ,, यह सुन कर मेरे प्रभु राम मंद मुस्कान से केवट की चतुराई पर प्रशन्नता व्यक्त करते है ,, तो यह मेरे प्रभु राम का हृदय था जो केवट के साथ केवट बन गए खेवनहार के लिये खेवनहार बन गये, भारतीय जनमानस में भगवान राम के समान विशाल हृदय किसी के

पास नही था। यही कारण था राम रोम में बस गये , और पाखंड के पर्याय कंकड़ पत्थर की मूर्तियों में।

नोटः- दोनों प्रसंगों को ध्यान से पढिये बुद्ध को देखिये वह निषादों को बोधिस्तवा का अधिकारी बनने के लायक भी नही समझे उन्होनो निषाद समाज का तिरस्कार किया ,, वही राम ने निषाद समाज को मोक्ष प्रदान किया हृदय से लगाया।

" श्री राम भक्त "

"भगवान निषादराज"

||समाप्त||

४-

बौद्ध मत के पाखण्ड का भंडाफोड़"

हिन्दुओ में अंधविस्वास उन्मूलन के नाम पर जहर घोलने वाले बौद्धों के धार्मिक कुकर्मो पर भी चर्चा होनी चाहिये ,, आखिर यह कौन सी पद्धति है कि

"" सूपा हंसे सो हसे चलनियो हसे जिसमे बहत्तर छेद""

बौद्ध मत में पशु-मैथुन

पाठकगण! बौद्ध मत में सगे,चचेरे,फूफेरे ममेरे सभी भाई-बहनों में विवाह तो चलता ही है, साथ में इनके इतिहास में पशुमैथुन तक होना मिलता है। महावंश, श्रीलंका का प्रामाणिक इतिहास माना जाता है। (कोई मूर्ख मन्दबुद्धि वैज्ञानिक ये न कह दे कि ब्राह्मणों ने श्रीलंका पहुंचकर महावंश में मिलावट करदी) हम बौद्ध विद्वान भदंत आनंद कौसल्यायन जी का "महावंश हिंदी अनुवाद" का प्रमाण दे रहे हैं। सारा (वृहद) अनुवाद आपको चित्रों में मिल जायेगा। अब संक्षेप में कथा पढ़कर आनंद लीजिये:-

महावंश के षष्ठम परिच्छेद में एक कथा आती है। बंगाल का एक राजा था। उसके एक कन्या पैदा हुई, तो ज्योतिषियों ने भविष्यवाणी की,कि यह कन्या आगे चलकर शेर के साथ मैथुन करेगी!! ।और हुआ भी ऐसा ही। जब यह कन्या बड़ी हुई , तब यह रूपवती और काम परायणा थी।यह लड़की एक दिन घूमते-घामते जंगल में पहुंच गई ।वहां पर इसे एक शेर मिला । शेर को देखकर यह काम मोहित हो गई ।शेर इसे अपनी पीठ पर उठाकर अपनी गुफा में ले गया और इसके साथ संभोग किया। इस लड़की को गर्भ रह गया और इसने जुड़वा

लड़का लड़की पैदा किए। लड़के का नाम सिंहबाहु रखा क्योंकि उसके हाथ-पैर शेर के जैसे थे और लड़की का नाम सिंहसीवली रखा।

जब सिंहबाहू16 साल का हो गया ,तब उसने अपनी मां से पूछा कि -"तुम्हारे और पिताजी के रूप में अंतर क्यों है ?"मां ने उसको सारी बात बताई ।फिर उसने निश्चय किया कि ,"हम यहां से चले जाते हैं"। गुफा पर एक बहुत बड़ा पत्थर था।उसे उठा कर के सिंह बहू 50 योजन दौड़ा और 50 योजन वापस आया।उसके बाद दोनों वहां से निकलकर एक गांव में पहुंचे, जहां पर उस राजकुमारी का मामा का लड़का रहता था।वहां पर सेनापति से उनकी भेंट हुई ।राजकुमारी ने बतलाया कि वे लोग वनवासी हैं सेनापति ने उनको वस्त्र दिए तथा पत्तों में चावल भोजन हेतु दिया। राजकुमारी के छूते ही वस्त्र बहुमूल्य वस्त्र बन गए और पत्ते सोने के पत्ते बन गए !! सेनापति विस्मित हो गया ।यह चमत्कार राजकुमारी के पुण्य प्रताप से हुआ ।इसके बाद सेनापति ने अपनी फुफेरी बहन को अपनी पत्नी बना लिया!

और आगे यह भी लिखा है कि सिंहबाहु ने लाट देश बसाया तथा सिंहसीवली को अपनी पटरानी बनाया,मतलब अपनी जुड़वा बहन से ही शादी कर ली!

फिर कहा गया है कि सिंहसीवली से 16 जुड़वा संताने हुई। यानी कुल ३२। इनमें एक 'विजय' नाम का व्यक्ति हुआ और इसने सिंहल द्वीप आ कर के बौद्ध धर्म का प्रचार किया।

(महावंश, षष्ठम परिच्छेद)

समीक्षा:-

१:- मानव स्त्री का शेर के साथ संभोग करना और उससे संतान उत्पन्न करना पूर्ण रूप से अवैज्ञानिक बात है। यह बात इतिहासविरुद्ध भी है।ऐसी मूर्खतापूर्ण गप्प का प्रचार बौद्ध ग्रंथ करते हैं

२:- 16 साल का लड़का लगभग सौ गज दूर दौड़कर एक भारी पत्थर उठाकर दौड़ता है ,यह बिल्कुल असंभव लगता है।

३:- राजकुमारी के छूने से पत्ते सोने के पत्ते बन गए ,यह एक असंभव बात है।इस प्रकार के मूर्खतापूर्ण चमत्कार बौद्ध ग्रंथों में भरे हुए हैं।इसी प्रकार से भिक्षुओं का उड़ना आदि अन्य चमत्कार बताकर अपने मत का प्रचार किया है।

४:- साथ ही यहां पर पत्तों का स्वर्णिम होने का चमत्कार राजकुमारी के पुण्य का बल कहा गया है।भला बताइए,जिस लड़की ने पशु मैथुन जैसा महापाप किया हो उसका कौन सा पुण्य?

५:- सगे भाई-बहन से उत्पन्न हुये "विजय" ने बौद्ध मत का प्रचार किया।इससे सिद्ध है कि राजकुमारी,सिंहुबाहु, विजय आदि का बौद्ध मत से सीधा संबंध है। जिनके प्रचारक राजा के ही वंश में इतनी छीछालेदर बातें हुई हैं, उनके मत का कहना ही क्या!

६:- सेनापति का फुफेरी बहन से विवाह करना और जुड़वा भाई बहनों का आपस में विवाह करना बौद्ध मत की नंगी तस्वीर दर्शाता है।यही नहीं,श्रीलंका के इस इतिहास ग्रंथ में ही एक जगह लिखा है कि श्रीलंका कि एक राजकुमारी ने अपने ममेरे लड़के से विवाह किया। इनके दशरथ जातक में राम और सीता को सहोदर भाई -बहन कहा गया है और इन कभी विवाह करा डाला!निकट संबंध में विवाह करना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है और विज्ञान के विरुद्ध है और समाज में इसे अनैतिक भी माना जाता है।

नवबौद्ध सदा ब्रहमा पर अपनी बेटी से भोग, किंदम ऋषि से हिरणी का संभोग करना आदि आरोप लगाया करते हैं।यह सारे आरोप पूर्ण रुप से वेद विरुद्ध और मिथ्या हैं।लेकिन यह सारे आरोप इनके अपने घर से ही निकल कर इनके ऊपर हो रहे हैं, और यह केवल बौद्ध मत के प्रमाणिक ग्रंथों को ब्राह्मणों का बनाया हुआ है ,कहकर अपना पिंड छुड़ाना चाहते हैं ।जबकि सालों से ग्रंथों को

बौद्ध लोग मानते हैं,इनका उपदेश प्रचार करते हैं इसलिए इनकी प्रमाणिकता सिद्ध है।इन से जी चुराना नवबौधों का पाखंड है।

।।धन्यवाद।।

(२३ जून १८)

संदर्भ ग्रंथ एवं पुस्तकें:-

महावंश- अनुवादक, भदंत आनंद कौसल्यायन

आभार - कार्तिक अय्यर

||समाप्त||

५-

बौद्ध मत एक पैशाचिक मत है?

वस्तुतः बौद्ध मत ऊपर से बहुत साफ शुद्ध और पवित्र दिखाई देता है ,,, किंतु तभी तक जब तक आप इसे दूर से देखते है ,, किंतु इस मत कि पोल तो तब खुल जाती है जब आप इसे करीब से देखते और समझते है।

(२) चर्बीवाली दवा

उस समय रोगी भिक्षुओंको चर्बीकी दवाईका काम था। भगवान्से यह बात कही।—

"भिक्षुओ! अनुमति देताहूँ चर्बीकी दवाईकी, (जैसेकि) रीछकी चर्बी, मछलीकी चर्बी, सोंसकी चर्बी, सुअरकी चर्बी, गदहेकी चर्बी, काल(पूर्वाह्ण)में लेकर कालसे पका कालसे, तेलके साथ मिलाकर सेवन करनेकी। भिक्षुओ! यदि विकालसे ग्रहण की गई हों, विकालसे पकाई और विकालसे खिलाई गई हों (और) भिक्षुओ! उनका सेवन करे तो तीनों दुक्कटोंका दोष हो। यदि भिक्षुओ! कालसे लेकर विकालसे पका, विकालसे मिला उनका सेवन करे तो दो दुक्कटोंका दोष हो। यदि भिक्षुओ! कालसे लेकर कालसे पका, विकालसे उनका सेवन करे (तो) एक दुक्कटका दोष हो। यदि भिक्षुओ! कालसे ले कालसे पका कालसे मिला उनका सेवन करे तो दोष नहीं।" ३

बौद्ध मत को मानवतावादी कहने वाले लोगो की संख्या बहुत हूं अभी जो बाते आप नीचे पढेंगे उससे बौद्ध मत एक पैशाचिक मत लगेगा ,,

त्रिपटक के महावग्गो में ,, बुद्ध ने इनेक प्रकार कि चिकित्सकीय प्रकियाओं का उल्लेख किया ,, जिसमे भूत प्रेत का इलाज, विष का इलाज दुक्ककट रोग आदि आदि।।

२१८]   ३—महावग्ग   [६§१।११

"भिक्षुओ ! अनुमति देता हूँ आटेकी चलनीकी।"

सूक्ष्म (=चलनी)की आवश्यकता थी।—

भिक्षुओ ! अनुमति देता हूँ कपळेकी चलनीकी।" 12

(१०) कच्चे मांस और कच्चे खूनकी दवा

उस समय एक भिक्षुको अ-म नु ष्य (-भूत-प्रेत)का रोग था। आचार्य उपाध्याय उसकी सेवा करते करते नीरोग नहीं कर सके। सूअर मारनेके स्थानपर जाकर उसने कच्चे मांसको खाया, कच्चे खून को पिया, और उसका वह अ-म नु ष्य वाला रोग शान्त होगया। भगवान्से यह बात कही।—

"भिक्षुओ ! अनुमति देता हूँ अ-मनुष्यवाले रोगमें कच्चे मांस और कच्चे खूनकी।" 13

इसी क्रम में बुद्ध अनेक प्रकार की दवाओं का उल्लेख करते है जैसे साँप काट ले तो पखाना, पेशाब, मिट्टी और राख का सेवन करवाया जाये। दुक्कक्ट का दोष हो जाये तो मछली, शुवर, गदहा, भालू की चर्बी से दवा बनाने कि बात करते है।

उपर्युक्त प्रमाण विनय पिटक के महावग्ग ६/१/११ से है जिसका हिंदी अनुवाद राहुल संस्कृतायन ने किया है | इसमें एक भिक्षु किसी बिमारी से ग्रसित हो जाता है तो किसी स्थान पर जा कर सूअर का कच्चा मांस और कच्चा खून पी जाता है | तब वो आकर ये बात बुद्ध को बताता है बुद्ध आज्ञा देते है कि इस तरह के रोगों में भिक्षु कच्चा मांस और कच्चा खून पीये |

वही दूसरी जगह सर्प के काटने पर विष निवारण हेतु बुद्ध , पखाना , पेशाब, मिट्टी, और राख, खिलाने पिलाने की आज्ञा देते है।

२२२] ३—महावग्ग [६§२।११

८—घाव नहीं भरता था।—

"भिक्षुओ! अनुमति देता हूँ घावके तेलकी।" 57

९—तेल गिर जाता था। भगवान्‌से यह बात कही।—

"भिक्षुओ ! अनुमति देता हूँ विकासिक (=पतली पट्टी) सभी घावकी चिकित्सा की।" 58

(६) सर्प-चिकित्सा

१—उस समय एक भिक्षुको साँपने काटा था। भगवान्‌से यह बात कही।—

"भिक्षुओ! अनुमति देता हूँ चार म हा वि क टों के (खिला) देनेकी। जैसे कि पाखाना, पेशाब, राख और मिट्टी।" 59

२—तब भिक्षुओंको यह हुआ—क्या (दूसरेके) देनेपर (लेना चाहिये) या स्वयं ले लेना चाहिये। भगवान्‌से यह बात कही।—

"भिक्षुओ! अनुमति देता हूँ कल्प्यकारक (=ग्रहणकरानेवाले)के होनेपर दिया लेनेकी और कल्प्यकारकके न होनेपर स्वयं लेकर सेवन करनेकी।" 60

(७) विष-चिकित्सा

१—उस समय एक भिक्षुने विष खा लिया था। भगवान्‌से यह बात कही।—

"भिक्षुओ! अनुमति देता हूँ पाखाना पिलानेकी।" 61

२—तब भिक्षुओंको यह हुआ—क्या (दूसरेके) देनेपर (लेना चाहिये) या स्वयं लेना चाहिये। भगवान्‌से यह बात कही।—

"भिक्षुओ! अनुमति देता हूँ, जैसा करनेसे वह ग्रहण करे वही ग्रहणका ढंग है। (काम होजानेपर) फिर नहीं ग्रहण कराना चाहिये।" 62

इस प्रकरण से पता चलता है कि कच्चा मांस और कच्चे खून से चिकित्सा करने वाले भिक्षु पिशाच ही होंगे | और कितने तामस प्रवृत्ति और म्लेच्छो की तरह रहते होंगे | इसी तरह दूसरा चित्र महावग्ग ६/१/४ का है जिसके अनुसार बुद्ध रोग में चर्बी (जो पशुओ से प्राप्त होती है) की दवाई बना कर खाने के उपदेश करते है | इन प्रमाणों से सिद्ध है कि बुद्ध और उनके भिक्षु तामस प्रवृति के थे |

संदर्भित ग्रन्थ एवम् पुस्तके -

(१) विनय पिटक - राहुल सांस्कृत्यायन

||समाप्त||

६-

बुद्ध मिथक है काल्पनिक है?”

"बौद्ध राम के जन्म पर सवाल करते है और राम के जन्म के विषय में भ्रंमक दुष्प्रचार करते है , जबकि वाल्मीकि ने रामायण में राम को दसरथ का आत्मजा पुत्र कहा है ,, आत्मजा का अर्थ ही होता है अपने रक्त वीर्य से जन्म लेने वाला पुत्र या पुत्री अतः राम के विषय में जो भी तर्क नवबौद्ध दे रहे है उसका समाधान रामायण से ही हो जाता है।"

किंतु अब यह बौद्ध बताये की क्या बुद्ध शुदयोधन के पुत्र थे?

क्यो की बौद्ध ग्रंथों में तो महामाया के गर्भ धान का कारण गजराज को बताया गया गया ,, और उल्लेख किया है कि एक दिन महामाया ने स्वप्न देखा कि एक गजराज कमल के फूल के साथ उनके गर्भ में समा गया है ,, उसके दूसरे दिन वह राज्य में अपने गर्भवती होने की घोसड़ा करती है ,,

अब यह बात अगर तर्को पर साधे तो इसमे बहुत सारे लोच है ,, पहला लोचा तो यही है कि कोई स्त्री गर्भवती है उसे इस बात का पता उसके शरीर मे होने वाले आकस्मिक बदलावों से चलता है न कि स्वप्न देखने के बाद कोई स्त्री यह समझती है कि वह गर्भवती है। ....

अतः यहाँ मामला संदेहास्पद है कि जब स्त्री को उसके गर्भ धारण का पता शारीरिक बदलावों से चलता है फिर महामाया ने अपने गर्भ की घोसड़ा हाथी वाला स्वप्न देखने के बाद ही क्यो कि ? जब तक हाथी उनके गर्भ में गर्भस्थ नही हुवा तब तक उन्होंने अपने गर्भावती होने की बात नही बताई यही बात महामाया के संदर्भ में संदेह उतपन्न करती है। कि आख़ीर बुद्ध अगर शुदयोधन के पुत्र होते तो महामाया हाथी का स्वपन देखने के बाद ही अपने

गर्भवती होने की घोसड़ा क्यो करती और ऐसी कौन सी स्त्री होगी जो अपने गर्भावस्था को स्वपन देखने के बाद स्वीकार करेगी, विचार करिये।

अतः इस बिंदु पर विचार करे तो महामाया का गर्भ संदेहास्पद है। अब एक और प्रमाण को देखते है जिससे दूध का दूध और पानी का पानी साफ हो जाएगा ,, भरहुत स्तूप पर स्पष्ट लिखा है " भगवतो ऊक्रति " अर्थात गौतम बुद्ध का ऊपर से आ कर गर्भ - स्थापन ,

अब वह विद्वान बताये की जब भरहुत स्तूप पर लिखा है कि महामाया का गर्भ बुद्ध के ऊपर से आ कर गर्भ में जाने से स्थापित हुवा था तो शुद्योधन बुद्ध के पिता किधर से हो गये?

स्वीकार किया है कि स्तूप पर जो लिखा है उसका अनुवाद यही है। ....साथ ही स्तूप पर जो चित्रकारी हुई है उसमें एक गजराज महामाया के गर्भ में समाहित हो रहा है ,

आप चित्र में स्पष्ट देख सकते है , और पढ़ भी सकते है अतः हम यहाँ यह मानने पर मजबूर है ऐतिहासिक और पुरात्विक आधारों पर कि महामाया का गर्भ गजराज के गर्भस्थ होने से हुवा था ,, अतः शुद्योधन बुद्ध के पिता नही थे ,, यही कारण था जब बुद्ध ज्ञान प्रप्ति के बाद पुनः शुयोधन के पास पहुचे तो शुद्योधन ने उन्हें अपने पुत्र होने का अहसास करवाना चाहा तो बुद्ध ने निःसंकोच यह कह दिया कि न आप मेरे पिता है न मैं आप का पुत्र ?

अतः अब जो अति बुद्धिमान बुद्धिजीवी लोग राम के जन्म पर सवाल खड़े कर रहे है वह पहले बुद्ध के जन्म और पिता को सिद्ध करे ?

अन्यथा हम दो बातों पर पुनर्विचार करने को बाध्य है कि महामाया का गर्भ गजराज के गर्भस्थ होने पर हुवा था ,, और शुद्योधन बुद्ध के पिता नही थे, अगर कुछ लोग इस बात से भी इंकार करते है तब उन्हें यह मानने पड़ेगा कि अगर गजराज से गर्भधान नही हुवा था तब भरहुत स्तूप के हिसाब से बुद्ध ऊपर से आ कर गर्भ - स्थापन करते है और यह बात बुद्ध के अस्तित्व को और ज्यादा कल्पनामय बनाती है ..... क्यो की ऊपर से आ कर कोई गर्भधारण नही करता अतः बुद्ध काल्पनिक है मिथक है।

अब अगर कोई विद्वान यह कहना चाहता है की यह स्वप्न वाली बात ब्राहमणों की मिलावट है तो स्तूप में किसने मिलावट की क्यो की आप का ही आरोप है की ब्राहमणों ने स्तूप तोड़े है फिर उनके द्वारा स्तूप बना कर उसमे मिलावट

करने का प्रश्न ही खड़ा नही होता अतः अब नवबौद्ध वैज्ञानिक अपने विज्ञान का करिश्माई प्रदर्शन कर के बताये की बुद्ध के पिता कौन थे ?

जबकि इस बात को तो मशहूर भाषा वैज्ञानिक राजेन्द्र प्रसाद ने भी माना है |

||समाप्त||